

पर्वतवासिन् (प० + वा०) 1) m. Gebirgsbewohner VARĀH. BRH. S. 19, 12. — 2) f. वासिनी a) Narde (आकाशमोसी) RĪĀN. im ÇKDR. — b) Bein der Durgā: उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनि । ब्रह्मयोगिनिसमुत्पन्ने गच्छ देवि ममात्तरम् ॥ इति श्यामापूजायां विसर्जनमन्त्रः ॥ ÇKDR. Derselbe मन्त्र, mit der geringen Abweichung यथासुखम् st. ममात्तरम् am Ende, wird ebendas. als यन्नुर्वेदीयगायत्रीविसर्जनमन्त्र bezeichnet und als Beleg für die Bed. गायत्री angeführt. Vgl. Ind. St. 2, 194.

पर्वतात्मजा (प० + आत्मजा) f. die Gebirgstochter, Bein. der Durgā HARIV. 9913.

पर्वताधारा (प० + आधारा) f. die Erde H. 937.

पर्वतायन s. पार्व०.

पर्वतारि (प० + अरि) m. der Feind der Berge, Bein. Indra's ÇABDAR. im ÇKDR.

पर्वतावृध् (पर्वत + वृध्) adj. der Berge (oder der zum Ausschlagen des Saftes dienenden Steine) sich freuend, vom Soma RV. 9, 46, 1. 71, 4.

पर्वताशय (प० + आशय) m. Wolke ÇABDAR. im ÇKDR.

पर्वताश्रय (प० + आश्रय) 1) adj. auf Bergen —, im Gebirge lebend.

— 2) m. das fabelhafte Thier Çarabha RĪĀN. im ÇKDR.

पर्वताश्रयिन् (प० + आश्र) m. Gebirgsbewohner VARĀH. BRH. S. 15, 8. 16, 17.

पर्वतीकर (पर्वत + 1. कर) zu einem Berge machen: परगुणापरमाणुं पर्वतीकृत्य BHARTR. 2, 71.

पर्वतीय (von पर्वत) adj. zum Berg gehörig, montanus P. 4, 2, 143. 144. राजन्, मनुष्य, फल Sch. श्लेषधयः AV. 19, 44, 6. आञ्जन 43, 3. वन HARIV. 2668. ein Fürst 3014. अर्पवतीयाः गुहाः auf der Ebene gelegen R. 4, 44, 106. — Vgl. पार्वतीय.

पर्वतेश्वर (पर्वत + ईश्वर) m. Gebirgsfürst MBH. 7, 1266.

पर्वतेश्ठा (पर्वते, loc. von पर्वत, + स्था) adj. auf Höhen weilend, von Indra RV. 6, 22, 2.

पर्वत्य (von पर्वत) adj. zum Berg —, zum Fels gehörig: वसूनि RV. 10, 69, 6. oxyt. TS. 1, 1, 6, 1.

पर्वधि (पर्वन् + धि) m. der Mond TAİK. 1, 1, 86. H. ç. 12 (fälschlich पर्वरि).

पर्वन् (= परुस्) n. Nir. 1, 20. UṆĀDIS. 4, 112. 1) Knoten am Rohr und an Pflanzen überh. AK. 2, 4, 3, 27. TAİK. 3, 3, 246. H. 1130. an. 2, 273. MED. n. 88. HALĀJ. 2, 34. अर्किसत्त श्लेषधीदात्तु पर्वन् AV. 12, 3, 31. TS. 1, 1, 3, 1. उपरि पर्वणा लूवा KAUC. 1. 61. ÇAT. Br. 6, 3, 4, 31. इतोः Spr. 413. तालैः — श्यामपर्वभिः HARIV. 3707. दत्तकाष्ठानि — युगपर्वणि VA. RĀN. BRH. S. 80 (79), 2. am Stiel eines Kāmara 70, 5. eines Sonnenschirms 71, 2. am Pfeilschaft: शराणां नतपर्वणाम् MBH. 5, 7143. 14, 2151. ÇĀK. 162 (wo अथुना नत० zu trennen ist). बाणोनानतपर्वणा (d. i. आनत) MBH. 1, 1067. R. 1, 1, 61. पञ्च० 3, 35, 87. 43, 20. त्रि० MBH. 4, 1361. निर्मज्जानं न पर्वणो जभार Rohr oder Röhre (des Knochens) RV. 10, 68, 9. — 2) Gelenk, Fuge, Glied: असिर्न पर्वं वृजिना मृणासि RV. 10, 89, 8. 1, 81, 12. VS. 23, 40. निर्भूड्वाच्छिक्तसमरत्तं पर्वं RV. 4, 19, 9. इमे मा पीता रथं न गावः समनाह् पर्वसु 8, 48, 3. AV. 1, 12, 2. 2, 9, 1. 6, 14, 1. 11, 8, 12. अङ्गा पर्वणि वि अयय 12, 5, 71. AIT. Br. 3, 31. पर्वणि विसर्जसुः ÇAT. Br. 1, 6, 3, 35. fgg. मीवाणाम् 3, 4, 3, 2. 6, 1, 3, 31. 10, 4, 5, 2. यथा पर्वणा पर्वं संदध्यात् 11, 5, 8, 6. वि पर्वणि विहृतां सूत्वा उ AV. 1, 11, 1. भुजेनापतपर्व-

IV. Theil.

णा Handgelenk HARIV. 4336. करतलेरापर्वभोगोत्थितैः ÇĀK. 80. अङ्गुष्ठ०, अङ्गुलि० KĀTJ. ÇR. 1, 3, 38. 3, 4, 9. 22, 8, 16. ÇĀNKH. ÇR. 1, 10, 2. अङ्गुष्ठ-पर्वमात्राणां गर्भाणाम् MBH. 1, 4501. HARIV. 5687. Spr. 29. BHĀG. P. 5, 21, 17. 6, 8, 6. प्रदेशिन्यग्र० SUÇR. 1, 27, 11. पर्वगौरव 90, 20. प्रदेशिनी मध्य-पर्वदलहीना, कनिष्ठिका तु पर्वोना VARĀH. BRH. S. 58, 27. 67, 42. LAGHŪ. 2, 18. vom Glied der Gliedertiere SUÇR. 2, 293, 7. 13. — 3) Absatz, Abschnitt, Abtheilung überh., Glied in übertr. Bed.: सोपानपर्वणि RAGH. 16, 46. (खड्ग्य) व्रणो ऽप्रुभो वियनपर्वस्वः VARĀH. BRH. S. 49, 1. हरिवं-शो ऽयं पप्रथे ऽनेकपर्वभृत् ÇATR. 10, 312. तमो मोह (lies मोहे) महामोह-स्तामिन्नो ऽत्यन्धसंज्ञितः । अविद्या पञ्चपर्वषा प्राडुर्भूता महत्तमनः ॥ VP. 1, 3, 4 bei MIRA, Sanscrit Texts 1, 20; vgl. BUĀG. P. 3, 20, 18. Schol. zu KAP. 1, 70. चतुर्विंशति० (कालचक्र) die 24 Halbmonate des Jahres MBH. 3, 10644. fg. चक्रे चतुर्विंशतिपर्वयोगे 1, 808. त्रिशतपष्टि० (कालचक्र) die 500 Tage BUĀG. P. 3, 21, 18. Abtheilung in einem Schriftwerke, = ग्रन्थ-संधि TAİK. 3, 2, 25. = ग्रन्थविशेष H. an. ÇAT. Br. 13, 4, 3, 7. fgg. MBH. 1, 310. fgg. सामवेदानां पर्वीदीन् Verz. d. B. H. 315, 4. गुण० JOGAS. 2, 19. विशिर्हत्सुन्नतस्य च । पञ्चपर्वीभिरामश्रि चरितं कीर्तयिष्यते ॥ ÇATR. 10, 320. ein natürlicher Haltepunkt in einer Erzählung, in einem Gespräch: अर्पवणि कथामङ्गं करोति विरसीभिवन् KĀM. NĪTIS. 3, 44. Glied eines Compositums VS. PRĀT. 1, 138. 149. 5, 7. AV. PRĀT. 4, 53. 77. Nir. 2, 2. — 4) Zeitabschnitt, ein bestimmter Zeitpunkt, Knotenpunkt eines Zeitumlaufs RV. 1, 94, 4. ÇAT. Br. 1, 6, 3, 35. 6, 2, 3, 24. VS. 13, 43. सोवत्सरिकेषु पर्वसु GOBH. 2, 8, 17. ÇĀNKH. ÇR. 2, 14, 8. 3, 11, 9. संवत्सर० P. 4, 2, 21. VĀRTI. 3. त्रीणि पर्वणि कर्मणाः पौर्णमास्यमावात्ये पुण्यं नत्तत्रम् KAUC. 94. insbes. die Kāturmāsja-Feiertage KĀTJ. ÇR. 5, 2, 13. 22, 7, 1. 16. 17. 24, 4, 30. ÇĀNKH. ÇR. 14, 5, 6. 10, 4. 18. ĀÇV. ÇR. 9, 2, 3. die beiden (oder die vier) Mondwechsel KĀTJ. ÇR. 24, 6, 4. 25. 30. ÇĀNKH. ÇR. 3, 2, 1. 3, 1. LĪTJ. 8, 8, 46. 10, 16, 3. 13. GOBH. 1, 1, 13. 5, 14. विवर्धमानो वीर्षेण समुद्र इव पर्वणि R. 1, 35, 20. 2, 43, 11. 80, 4. 6, 78, 7. मूल्नि पर्वणि पूर्णस्य (das Vollmondes) यथा द्वयं महोदधेः HARIV. 5479. सावित्राञ्जलिहोमशो कुर्यात्पर्वसु नित्यशः M. 4, 150. 153. SĪV. 1, 25. पर्वणि तं वसं यजमानस्य R. 1, 40, 7. य इमं प्रुचिरध्यायं पठेत्पर्वणि पर्वणि MBH. 1, 262. 3, 13626. 4, 435. JĀĀN. 3, 334. VP. 312. पर्ववर्जं व्रजेच्चैनाम् (भार्याम्, M. 3, 45. JĀĀN. 1, 79; vgl. अमा-वास्यामष्टमीं (d. i. in der ersten Monatshälfte) पौर्णमासीं चतुर्दशीम् (d. i. in der zweiten Monatshälfte) ब्रह्मचारी भवेन्नित्यम् 4, 128. पर्वश्रद्धादि MĀN. P. 30, 3. शिरो ऽपर्वणि (an einem gewöhnlichen Tage) मुष्टि-तम् Spr. 1352. तस्मादपावर्तत कुण्डिनेशः पर्वत्यये (so v. a. अमावास्या-त्यये) सोम इवोन्नरश्मेः RAGH. 7, 30. दर्शमस्कन्दपर्वं पौर्णमासं च योगतः M. 6, 9. मम चैतत्समारब्धं पर्वं das beim Mondwechsel übliche Opfer R. 3, 42, 14. प्रविद्धा रत्तसो भागः पर्वणीवाकित्तामिना R. SCHL. 2, 43, 5. die Zeit, da der Mond bei seiner Conjunction oder Opposition durch den Knoten geht (Sonnenfinsterniss oder Mondfinsterniss): सतमस्कं पर्वं विना लषा नामार्कमण्डलं कुरुते VARĀH. BRH. S. 3, 6, 5, 23. fgg. SŪRJAS. 4, 8, 5, 3. 14, 13. पीडाकरं फाल्गुणामासि पर्वं VARĀH. BRH. S. 5, 73. अषा-ढपर्वणि 77. ह्यवेव प्रसते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौ भासुरौ भ्रातः पर्वणि पश्य दानवपतिः शीर्षावशेषोक्तः BHARTR. 2, 27. अर्पवणि महाराज सूर्यं राङ्गुर्येष्यति MBH. 3, 13091. HARIV. 9872. अर्पवणि प्रकलुषेन्दुमण्डला विभावरौ ऋथ कथं भविष्यति MĀLAV. 74. BRĀG. P. 5, 24, 2. सूर्यप्रक-

37*